ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 872-873
www.allresearchjournal.com
Received: 17-11-2015
Accepted: 21-12-2015

डॉ. प्रतिमा कुमारी
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. प्रतिमा कुमारी
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

भूदान आन्दोलन प्रणेता : आचार्य विनोबा भावे

डॉ. प्रतिमा कुमारी

सारांश–
भारत अंग्रेजी हुकूमत से आजाद हो चुका था, पर इसके बाद भी कई ऐसी बेड़ियाँ समाज को जकड़े हुए थी, जिसे जल्द से जल्द तोड़ना बहुत जरूरी था। इन बेड़ियों में कई जिन्दगी कैद थी। अंग्रेज जाते–जाते भारत को हर तरह से कमजोर कर गये थे। कई लोग इस तरह से गरीब हो गये थे कि उनके पास रहने भर के लिए भी जगह नहीं थी।
इस विभीषिका का अंदाजा उन्हें तब लगा जब वे अस्सी हरिजन परिवारों से मिले और उनकी बातें सुनी। इस आन्दोलन के जरिये आचार्य विनोबा भावे उन गरीबों की मदद करना चाहते थे, जिसके पास रहने तक के लिए भी जगह नहीं थी। उन्होंने सबसे पहले अपनी भूमि दान में दी और फिर भारत के विभिन्न हिस्सों में घूम–घूम कर लोगों से उनकी जमीन का छठवाँ हिस्सा गरीब परिवारों के लिए देने के बात कही।

प्रस्तावना:
जब–जब मानवता विनाश की ओर बढ़ती चली जाती है, नैतिक मूल्य अपनी पहचान खोते जाते हैं, समाज में पारस्परिक संघर्ष की स्थितियां बनती हैं, समस्याओं से मानव मन कराह उठता है, तब–तब कोई न कोई महापुरुष अपने दिव्य कर्तव्य, मानवतावादी सोच, चिन्मयी पुरुषार्थ और तेजोमय शौर्य से मानव–मानव की चेतना को झंकृत कर जन–जागरण का कार्य करता है। समय–समय पर ऐसे अनेक महापुरुषों ने अपने क्रांत चिंतन के द्वारा समाज का समुचित पथदर्शन किया। महापुरुषों की इसी महिमामंडित शृंखला का एक गौरवपूर्ण नाम है आचार्य विनोबा भावे।
आचार्य विनोबा भावे हमारे लिये एक प्रकाश स्तंभ है। वे राष्ट्रीयता, नैतिकता एवं अहिंसक जीवन एवं पीड़ितों एवं अभावों में जी रहे लोगों के लिये आशा एवं उम्मीद की एक मीनार थे, रोशनी उनके साथ चलती थी। वे संतों की उत्कृष्ट पराकाष्ठा थे, भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता, विशिष्ट उपदेष्टा, महान् विचारक तथा प्रसिद्ध गांधीवादी नेता थे। उनका मूल नाम विनायक नरहरी भावे था। वे भारत में भूदान आन्दोलन प्रणेता के रूप में सुपरिचित थे। वे भगवद्गीता से प्रेरित जनसरोकार वाले जननेता थे, प्रवचनकार थे, महामनीषी थे, जिनका हर संवाद सन्देश बन गया है। [1]
वे कर्मप्रधान व्यक्ति थे इसलिए गीता उनका आदर्श थी। उन्होंने अपने प्रवचनों में गीता का सार बेहद सरल शब्दों में जन–जन तक पहुँचाया ताकि उनका आध्यात्मिक उदय हो सके, अंधेरों में उजाले एवं सत्य की स्थापना हो सके।
विनोबा भावे ने सर्वोदय समाज की स्थापना की। यह रचनात्मक कार्यकर्ताओं का अखिल भारतीय संघ था। इसका उद्देश्य अहिंसात्मक तरीके से देश में सामाजिक परिवर्तन लाना था। इस कार्यक्रम में वे पदयात्री की तरह गाँव–गाँव घूमे और इन्होंने लोगों से भूमिखण्ड दान करने की याचना की, ताकि उसे कुछ भूमिहीनों को देकर उनका जीवन सुधारा जा सके। उनका यह आह्वान जितना प्रभावी रहा, वह विस्मित करता है। वे गांधीवादी विचारों पर चले। रचनात्मक कार्यों और ट्रस्टीशिप जैसे विचारों का प्रयोग किया। [2]
1940 में प्रथम सत्याग्रही के रूप में विनोबा ने अपना भाषण पवनार में दिया। 9 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन के सिलसिले में जेल चले गये। 9 जुलाई 1945 को जेल से रिहा होकर पवनार आश्रम का भार पुनः अपने कन्धों पर ले लिया। 15 अगस्त को आजादी मिलते ही बंगाल में दीन–दुखियों के कष्ट निवारण के लिए निकल पड़े। [3]
उन्होंने सत्याग्रह पर विश्वास रखते हुए सर्वोदय समाज की स्थापना की। 7 मार्च 1951 में पैदल यात्रा करते हुए भूदान आन्दोलन की शुरुआत की। नरगोड़ा के पोचमपल्ली गांव में 13 अप्रैल 1951 को भूमिहीन हरिजनों की पुकार सुनी। वहां के जमींदार रामचन्द्र रेड्डी ने 100 एकड़ जमीन देकर विनोबा के भूदान यज्ञ की शुराआत की। इस तरह उन्होंने भूदान के लिए कई क्षेत्रों की पदयात्रा की। [4]

सन् 1955 तक आते–आते भू–आंदोलन ने एक नया रूप धारण किया। इसे 'ग्रामदान' के रूप में पहचाना गया। इसका अर्थ था 'सबे भूमि गोपाल की'। उनकी जन नेतृत्व क्षमता का अंदाज इसी घटना से लगता है कि इन्होंने चम्बल के डाकुओं को आत्मसमर्पण के लिए प्रेरित किया और वे विनोबाजी से प्रभावित होकर आत्म–समर्पण के लिए तैयार हो गए। 1960 में चम्बल के डाकुओं का आत्मसमर्पण करवाया। [5]

1974 को अखिल भारतीय स्त्री सम्मेलन में भाग लेते हुए स्त्री–शक्ति के महत्त्व का लोगों को ज्ञान कराया। 25 दिसम्बर 1974 को मौन–व्रत धारण किया, साथ ही गोवध के विरोध में अनशन शुरू किया। अनशन के दौरान उनकी तबीयत बिगड़ते देखकर मोरारजी देसाई ने पशु–संवर्धन को केन्द्रीय सूची में शामिल किया। [6]

विनोबा भावे को भारत का राष्ट्रीय आध्यापक और महात्मा गांधी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी समझा जाता है। आज भी कुछ लोग यही कहते हैं। मगर यह उनके चरित्र का एकांगी और एकतरफा विश्लेषण है। वे गांधीजी के 'आध्यात्मिक उत्तराधिकारी' से बहुत आगे, स्वतंत्र सोच एवं मानवतावादी कार्यक्रमों के स्वामी थे। मुख्य बात यह है कि गांधीजी के प्रखर प्रभामंडल के आगे उनके व्यक्तित्व का स्वतंत्र मूल्यांकन हो ही नहीं पाया। उनको हम ज्ञान का अक्षय कोष कह सकते हैं।

गांधी के सान्निध्य में आने से पहले ही विनोबा आध्यात्मिक ऊंचाई प्राप्त कर चुके थे। संत ज्ञानेश्वर एवं संत तुकाराम उनके आदर्श थे। आश्रम में आने के बाद भी वे अध्ययन–चिंतन के लिए नियमित समय निकालते थे। भूदानयज्ञ में विनोबाजी प्रतिदिन दो बार प्रवचन करते थे और अपने प्रत्येक प्रवचन में नयी–नयी बातें कहते थे। एक दिन उनसे पूछा गया, ''बाबा, आप इतने दिनों से भाषण देते आ रहे हैं, लेकिन आपके हर भाषण में कुछ नवीनता रहती है। यह कैसे संभव होता है?'' विनोबाजी ने कहा, ''पैदल जो चलता हूं। उससे धरती का स्पर्श होता है और प्रकृति से नजदीक का संबंध जुड़ता है। मन में नित–नयी स्फूर्ति उत्पन्न होती है। उसी से नयी–नयी बातें सूझती हैं।'' [7] बिनोबाजी ने जो कहा, उसमें बड़ी सच्चाई थी।

विनोबा भावे ने गाँधीजी के साथ देश के स्वाधीनता संग्राम में बहुत काम किया। उनकी आध्यात्मिक चेतना समाज और व्यक्ति से जुड़ी थी। इसी कारण सन्त स्वभाव के बावजूद उनमें राजनैतिक सक्रियता भी थी। उन्होंने सामाजिक अन्याय तथा धार्मिक विषमता का मुकाबला करने के लिए देश की जनता को स्वयंसेवी होने का आह्वान किया। वे महात्मा गाँधी द्वारा पहले एकल सत्याग्रही के रूप में चुने गए और गाँधीजी ने उन्हें 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में भी साथ लिया।

पवनार आश्रम में आने के बाद वही उनका स्थायी मुख्यालय बन गया। भारत के स्वतन्त्र होने के बाद विनोबा भावे ने समाज सुधार के आंदोलन की शुरुआत की। इस क्रम में भूदान तथा सर्वोदय आन्दोलन बहुत प्रभावी रहे। उनका मानना था कि भारतीय समाज के पूर्ण परिवर्तन के लिए अहिंसक एवं नैतिक क्रांति की आवश्यकता है। इसके लिये वे आचार्य तुलसी और उनके अणुव्रत आन्दोलन को उपयोगी मानते थे और उन्हें अपना पूरा समर्थन प्रदत्त किया। [8]

विनोबा भावे करुणाशील थे, उनकी करुणा एवं संवेदना से पूरी मानवता आप्लावित थी। नेतृत्व वही सफल होता है जो सबको साथ लेकर, सबका अपना होकर चले। उनका नेतृत्व कद ऊंचा इसलिये उठ गया, क्योंकि उन्होंने अपना वात्सल्य, प्रेम, विश्वास और सौहार्द सबमें बांटा। उपलब्धियों में सबको सहभागी माना। अपने साथियों एवं कार्यकर्ताओं का दर्द–बांटना उनकी सर्वोपरि प्राथमिकता थी।

गांधी के सच्चे अनुयायी, मद्य निषेध तथा सामाजिक बुराइयों के लिए निरन्तर संघर्ष करते हुए अपने भूदान आन्दोलन को जारी रखा। पवनार आश्रम में रहते हुए 15 नवम्बर 1982 में अपने शरीर का त्याग कर दिया। विनोबाजी मैग्सेसे पुरस्कार (1958) तथा 1983 के भारत रत्न से सम्मानित भी हुए हैं। उन्होंने 'मैत्री' तथा महाराष्ट्र धर्म नामक पत्रिका का सम्पादन भी किया था। [9]

विनोबाजी का जीवन दर्शन–

विनोबाजी ने धर्म को आध्यात्म से अलग माना। वे आध्यात्म को व्यावहारिक व निरपेक्ष मानते थे। उनका विचार था कि– 'विज्ञान के युग में धर्म नहीं टिकेगा, परन्तु आध्यात्मिकता जरूर टिकेगी।' उन्होंने आध्यात्मिकता को मानवता से जोड़ा। विनोबाजी का सर्वोदय दर्शन गांधीजी के सिद्धान्तों पर आधारित था। सर्वोदय का शाब्दिक अर्थ–सबका उदय, सभी व्यक्तियों का विकास है।

रस्किन की पुस्तक 'अन दू दी लास्ट' का गुजराती में अनुवाद करते हुए उन्होंने उसमें सर्वोदय–दर्शन को सभी प्राणियों की भलाई के लिए परिभाषित किया है। आर्थिक समानता हेतु उन्होंने कुटीर उद्योग–धन्धों के साथ–साथ प्रत्येक गांव को आत्मनिर्भर बनाने पर बल दिया था। सैकड़ों–हजारों बीघे जमीन के मालिक भूमिहीनों को कुछ भूमि दान में दे दें. तो सर्वोदय आन्दोलन से मनुष्य का उत्थान होगा। [10]

गांधीजी की तरह उनका सत्याग्रह दर्शन था। वे अहिंसा को भी महत्त्व देते थे। मन में हिंसक और अहिंसक दोनों प्रवृतियां होती हैं। अतः मनुष्य को अहिंसा का पालन करना चाहिए। जनतन्त्र–शासन–प्रणाली को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए वे उसे भ्रष्टाचार, जातिवाद, सम्प्रदायवाद से दूर ही रखना चाहते थे। वे स्वतन्त्रता, समानता तथा लोककल्याणकारी, निष्पक्ष लोकतन्त्र को मानते थे। शासक को जनता का सेवक व लोकतन्त्र का सन्तरी होना चाहिए।

विनोबाजी के शैक्षिक विचार–

विनोबाजी ने शिक्षा को एक आन्तरिक प्रक्रिया माना है, बाह्य ज्ञान नहीं। वे शिक्षा का उद्देश्य बालक को उत्तम संस्कार देने के साथ–साथ शरीर, मन, आत्मा का विकास मानते थे। सामाजिक विकास सभी व्यक्तियों का विकास, आर्थिक स्वावलम्बन का विकास, जीवन जीने की कला का विकास, आध्यात्मिक विकास उनके शैक्षिक उद्देश्य थे। बालक के पाठ्यक्रम में सामाजिकता के विकास तथा वर्धा शिक्षा योजना के पाठ्यक्रम को महत्त्व दिया। क्रियात्मक विधि, श्रुत विधि, विश्रामसहित शिक्षण, भ्रमण विधि को श्रेष्ठ शिक्षण विधि माना। स्त्रियों की शिक्षा पर उन्होंने विशेष बल दिया। [11]

निष्कर्ष–

भूदान यज्ञ वास्तव में अहिंसा क्रान्ति का ही दूसरा नाम है। प्रत्येक भूमिहीन परिवारों को 5–5 एकड़ भूमि दान करवाने का उनका जो लक्ष्य था, उसमें उन्होंने 25 लाख 15 हजार 101 एकड़ भूमि 2 लाख 36 हजार 22 दाताओं से प्राप्त की। यह उनकी महानतम उपलब्धि और समाज को एक बड़ी देन है। वे गांधीजी के सच्चे उत्तराधिकारी थे। विनोबाजी ने रामराज्य का स्वप्न देखा था, जिसमें भूदान, ग्रामदान, सम्पत्तिदान तथा मानव सेवा का आदर्श सम्मिलित था।

सन्दर्भ–

1. गीता प्रवचन, भूमिका, पृ.–9
2. साम्ययोगी विनोबा भावे, पृ.–13
3. गाँव सुखी हम सुखी, पृ.–28
4. गाँव सुखी हम सुखी, पृ.–29
5. जीवन और शिक्षण, पृ.–20
6. गाँव सुखी हम सुखी, पृ.–7
7. जीवन और शिक्षण, पृ.–12
8. मधुकर, पृ.–30
9. लोकनीति, पृ.–6
10. गाँव सुखी हम सुखी, पृ.–18
11. जीवन और शिक्षण, पृ.–10